(घ) कोटा जिले के छीपाबड़ौद कस्बे को रेल लाइन से कब तक जोड़ दिए जाने की संभावना है?

**रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री एम० मल्लिकार्जुन)** : (क) राजस्थान के निम्नलिखित जिला मुख्यालय रेल से जुड़े हुए नहीं हैं —

1. बांसवाड़ा
2. झालावाड़
3. सिरोही
4. टोंक

इन जिला मुख्यालयों को रेल लाइनों से जोड़ने के लिए कोई समय अनुसूची नहीं दी जा सकती क्योंकि ये किसी स्वीकृत कार्य के संरेखन में नहीं आते।

(ख) जी, नहीं।

(ग) 1.5.1989 से बीना-कोटा खंड के बीना-गुना-रूठियाई भाग में 4309/4310 उज्जैन-देहरादून-उज्जैनी एक्सप्रेस (सप्ताह में दो बार चलनेवाली) चल रही है।

(घ) चिपाबादोद टाउन में रेल संपर्क की व्यवस्था करने का फिलहाल कोई प्रस्ताव नहीं है।

## खाद्यान्नों की उपलब्धता

**19. डा० अबरार अहमद** : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या वर्तमान में देश में खाद्यान्नों की उपलब्ध मात्रा हमारी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त है; यदि नहीं, तो किन-किन वस्तुओं की आपूर्ति कम है तथा इन वस्तुओं की मांग को किस प्रकार पूरा किया जा रहा है और इन वस्तुओं की आपूर्ति को सतत् रूप से बनाए रखने के संबंध में क्या-क्या कार्यक्रम बनाए गए हैं?

**कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री मुलायपल्ली रामचंद्रन)** : खाद्यान्नों की आवश्यकता की पूर्ति कुल मिलाकर, घरेलू उत्पादन से की जाती है। तथापि, दालों के मामले में कमी की पूर्ति आंशिक रूप से आयात करके की जाती है।

सरकार भविष्य में खाद्यान्नों की उपलब्धता बढ़ाने के लिये विशेष खाद्यान्न उत्पादन कार्यक्रम, राष्ट्रीय दलहन विकास कार्यक्रम, अनाज मिनीकिट कार्यक्रम, समेकित चावल विकास कार्यक्रम जैसे कार्यक्रम क्रियान्वित कर रही है। अन्य कार्यक्रमों, जैसे छोटे और सीमांत किसान विकास कार्यक्रम और राष्ट्रीय पनधारा विकास कार्यक्रम आदि में भी खाद्यान्नों सहित फसलों की उत्पादकता बढ़ाने की बात निहित है। दलहन विकास कार्यक्रम तिलहन और दलहन प्रौद्योगिकी मिशन के अंतर्गत लाये गये हैं, ताकि फसल उत्पादन, कटाई के बाद की और परिसंस्करण तकनीकों में सुधार लाया जा सके और किसानों को दी जाने वाली सेवाओं को सरल बनाया जा सके।

## चीनी का उत्पादन

**20. श्री राम जेठमालानी**: क्या खाद्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि 1990-91 के गन्ना-पिराई मौसम के दौरान, 1989-90 के गन्ना-पिराई मौसम की तुलना में, चीनी उत्पादन में तीव्र वृद्धि हुई है;

(ख) यदि हां, तो पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष चीनी का उत्पादन अनुमानतः कितना होगा;

(ग) क्या यह भी सच है कि चीनी के मूल्य में वृद्धि के कारण इस उत्पादन वृद्धि का लाभ उपभोक्ताओं तक नहीं पहुंचेगा; और

(घ) यदि हां, तो पिछले वर्ष की तुलना में अभी तक चीनी के मूल्य में

कितनी वृद्धि हुई है और इस मूल्य वृद्धि को रोकने के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं?

**खाद्य मंत्रालय के (स्वतंत्र प्रभार) मंत्री (श्री तरुण गोगोई)**: (क) जी, हां।

(ख) 1990-91 के चालू मौसम के दौरान 15 जून, 1991 तक चीनी का कुल उत्पादन 116.63 लाख टन हो गया जबकि पिछले वर्ष की इसी तारीख को यह उत्पादन 106.94 लाख टन था। 1990-91 के चालू मौसम के अंत तक चीनी का उत्पादन लगभग 119 लाख टन होने का अनुमान है जब कि पिछले मौसम के दौरान यह उत्पादन 109.89 लाख टन था।

(ग) और (घ) चीनी उत्पादन में वृद्धि को ध्यान में रखते हुए सरकार ने इस वर्ष आंतरिक उपभोग हेतु खुली बिक्री चीनी की रिलीज बढ़ा दी है। जून तथा जुलाई, 1991 के प्रत्येक मास के लिए 6.25 लाख टन खुली बिक्री कोटा रिलीज़ कर दिया गया है जबकि पिछले वर्ष इन्हीं महीनों के दौरान 6 लाख टन खुली बिक्री चीनी रिलीज़ की गई थी। जून, 1991 के दौरान चीनी की खुदरा कीमतें 8 रु. 60 पैसे से लेकर 10 रु. प्रति कि. ग्रा. रही जबकि पिछले वर्ष इसी मास के दौरान इन कीमतों का स्तर 8 रु. से लेकर 9 रु. 30 पैसे प्रति कि. ग्रा. तक रहा था। प्रत्येक मास खुली बिक्री चीनी की पर्याप्त मात्रा रिलीज़ करके तथा अन्य आवश्यक नियामक उपायों द्वारा चीनी की कीमतों को नियंत्रित करने के प्रयास किए जाएंगे।

### कृषि उपज का उत्पादन लक्ष्य

21. **श्री राम जेठमलानी**: क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि 1991-92 के वर्ष के लिए देश में कृषि उत्पादन का लक्ष्य 182.5 मिलियन टन निर्धारित किया गया है;

(ख) क्या यह सच है कि आगामी वर्षों के लिए कृषि उत्पादन में प्रतिवर्ष 3.5 प्रतिशत वृद्धि प्राप्त करने का भी लक्ष्य निर्धारित किया गया है;

(ग) क्या यह भी सच है कि स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर अब तक वार्षिक उत्पादन दर में 2.8 प्रतिशत से अधिक वृद्धि नहीं हुई है; और

(घ) यदि हां, तो आगामी वर्षों में इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सरकार द्वारा कौन-कौन से नए उपाय किए जाने का विचार है?

**कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री मुल्लापल्ली राम चन्द्रन)**: (क) वर्ष 1991-92 के लिए खाद्यान्न उत्पादन का लक्ष्य 182.5 मिलियन मीटरी टन निर्धारित किया गया है।

(ख) आठवीं योजना अवधि के लिए कृषि विकास का लक्ष्य अभी निर्धारित नहीं किया गया है।

(ग) सातवीं योजना अवधि (1985-86 से 1989-99) में कृषि उत्पादन की संयुक्त वृद्धि दर 3.97 प्रतिशत प्रतिवर्ष थी, जबकि इसके मुकाबले 1949-50 से 1989-90 तक की अवधि के दौरान दीर्घावधि वृद्धि दर 2.66 प्रतिशत प्रतिवर्ष थी।

(घ) खाद्यान्नों और अन्य फसलों के उत्पादन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रतिपादित उपाय है-(1) स्थान विशिष्ट अधिक उपज देने वाली किस्मों के क्षेत्र में वृद्धि (2) वर्षा सिंचित क्षेत्रों में सिंचाई के पानी और मृदा की नमी का कुशल उपयोग (3) कम उत्पादकता वाले क्षेत्रों में खाद्यान्न फसलों की उत्पादकता के स्तर बढ़ाने पर जोर देना और, (4) किसानों को आदानों की सप्लाई सही समय पर और पर्याप्त मात्रा में करना अधिक उपज देने वाली किस्में